Impact Factor – 6.261 Special Issue - 131 Feb. 2019 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Journal

Multidisciplinary International E-research Journal

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

■ GUEST EDITOR ■

Principal Dr. P. R. Chaudhari

■ EXECUTIVE EDITOR ■

Dr. Vijay A. Sonje

■ ASSOCIATE EDITOR ■

Dr. Kalpana L. Patil

Dr. Ishwar P. Thakur

Dr. Satish D. Patil

■ CHIEF EDITOR ■

Mr. Dhanraj T. Dhangar

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor (UIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

PRINCIPAL
SAU.RAJANITAI NAHASAHEB DESHMUKH
ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE,
BHADGAON DIST.JALGAON (424105)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' *International Multidisciplinary E- Research Journal*
Impact Factor - (SJIF) – 6.261
Special Issue 131 : हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

ISSN : 2348-7143
Feb. 2019

रिसर्च जर्नी

इंटरनॅशनल मल्टिडिसीप्लीनरी ई–रिसर्च जर्नल

विशेषांक क्र. १३१

१७ फरवरी, २०१९

हिंदी साहित्य में विविध विमर्श

संपादक मंडल

(केवल इस अंक के लिए)

अतिथी संपादक

प्राचार्य डॉ. पी. आर. चौधरी

तापी परिसर विद्या मंडल, फैजपूर द्वारा संचलित धनाजी नाना महाविद्यालय, फैजपूर.

कार्यकारी संपादक

डॉ. विजय ए. सोनजे

तापी परिसर विद्या मंडल, फैजपूर द्वारा संचलित धनाजी नाना महाविद्यालय, फैजपूर.

सह संपादक

डॉ. कल्पना एल. पाटील

डॉ. ईश्वर पी. ठाकूर **प्रा. सतीश डी. पाटील**

तापी परिसर विद्या मंडल, फैजपूर द्वारा संचलित धनाजी नाना महाविद्यालय, फैजपूर.

मुख्य संपादक

प्रा. धनराज धनगर

एम.जी.व्ही.एस. आर्टस्, कॉमर्स अॅन्ड सायन्स कॉलेज, येवला, जि. नाशिक.

PRINCIPAL
SAU.RAJANITAI NANASAHEB DESHMUKH
ARTS.COMMERCE & SCIENCE COLLEGE,
BHADGAON DIST.JALGAON (424105)

EDITORIAL POLICIES-Views expressed in the papers/ articles and other matter published in this issue are those of the respective authors. The editor and associate editors does not accept any responsibility and do not necessarily agree with the views expressed in the articles. All copyright [illegible] is made to acknowledge source material relied upon or referred to, but the Editorial Board and Publishers does not accept any responsib[illegible] omissions.

'RESEAR( )OURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journa. ISSN : 2348-7143

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261
Special Issue 131 : हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
ISSN : 2348-7143
Feb. 2019

INDEX

No.	Title of the Paper's and Author's	Page No.
०१	हिंदी विकास, विमर्श का दृष्टिकोण और लोकसेवक मधुकरराव चौधरी प्राचार्य डॉ.पी.आर. चौधरी	००१
०२	'मैं भी औरत हूँ' उपन्यास में किन्नर विमर्श डॉ. मधुकर खराटे	००३
०३	'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श डॉ. श्रीमती कामिनी भवानीशंकर तिवारी	००७
०४	आदिवासी कबूतरी समाज की संवेदना का उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' प्रा.डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील	००९
०५	उत्तर आधुनिकता का एक जीवंत दस्तावेज : तीसरी ताली डॉ. सुरेश तायडे	०११
०६	सुनीता जैन की कविताओं में माँ के विविध रूप डॉ. रेखा गाजरे	०१४
०७	नारी मन की संघर्ष गाथा को प्रस्तुत करता उपन्यास – 'राख से ढके मन' डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार	०२१
०८	'डीडगर इपिल' (हिम्मतवाली इपिल) मुंडारी नाटक में चित्रित समस्याएँ प्रा.डॉ. गौतम भाईदास कुवर	०२३
०९	महिला लेखिकाओं की कहानियों में स्त्रीवादी चेतना प्रा.डॉ. योगेश पाटील	०२५
१०	विमुक्त जनजाति –कंजर जनजाति का विमर्शमूलक आख्यान : रेत डॉ. संजय रणखांबे	०२७
११	'हाय!.हैंडसम' नाटक में चित्रित वृद्ध विमर्श प्रा.डॉ. संजयकुमार नंदलाल शर्मा	०३०
१२	'ध्रुवसत्य' उपन्यास में चित्रित आर्थिक संघर्ष की गाथा डॉ. विजयप्रकाश ओमप्रकाश शर्मा	०३३
१३	आदिवासी संस्कृति पर आधुनिक प्रोद्योगिकी का बढता प्रभाव : विकास के परिप्रेक्ष में डॉ. नीना एन. गायकवाड	०३५
१४	मानवीय अस्मिता का जीवंत दस्तावेज – पोस्ट बॉक्स नं २०३ नाला सोपारा प्रा.डॉ. कल्पना पाटील	०३७
१५	हिंदी ग़ज़ल में दलित विमर्श प्रा.डॉ. ईश्वर ठाकुर	०३९
१६	हिंदी का विकास विमर्श प्रा.डॉ. विजय एकनाथ सोनजे	०४२
१७	आदिवासी विमर्श और हिंदी उपन्यास प्रा. सतीष दत्तात्रय पाटील	०४४
१८	हिन्दी दलित साहित्य की परम्परा श्री. करूणा पाटगिरि	०४५
१९	'सुनो शेफाली' : दलित युवती के संघर्ष की गाथा प्रा.डॉ. शहाजी बाला चव्हाण	०४७
२०	'अपनी सलीबें' में दलित विमर्श डॉ. श्रीकांत पाटील	०४९
२१	हिंदी कहानी साहि नारी विमर्श लेफ्ट. डॉ. रविंद्र पाटील	०५१

PRINCIPAL
SAU.RAJANITAI NANASAHEB DESHMUK
ARTS.COMMERCE & SCIENCE COLLEG
BHADGAON DIST.JALGAON (424105)

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261
Special Issue 131 : हिंदी साहित्य में विविध विमर्श
ISSN : 2348-7143
Feb. 2019

आदिवासी संस्कृति पर आधुनिक प्रोद्योगिकी का बढता प्रभाव : विकास के परिप्रेक्ष में

डॉ. नाना एन. गायकवाड
प्राचार्य एवं हिंदी विभाग अध्यक्ष, सौ.र.ना. देशमुख कला, वाणिज्य एवंम विज्ञान महाविद्यालय, भडगाव, जिला जलगाव.

प्रौद्योगिकरण ने पुरे विश्व को अपने चपेट मे ले लिया है, भारत भी इससे अछुता नही है, स्थानिय दृष्टिसे महाराष्ट्र जैसा विकसनशील राष्ट्र भी निजिकरण के साथ साथ प्रौद्योगिकरण की ओर अग्रेसर है। स्थानिय दृष्टिकोन से हर प्रदेश का निवासी वहाँ के भूप्रदेश का मूल निवासी घोषित होता है, जैसे की आदिवासी इस भारत वर्ष के काश्मिर से लेकर कन्याकुमारी तक के प्रदेश मुलनिवासी घोषित होता है। आर्यो के आगमनो की पूर्व स्थिती में वह इस जल-जंगल का स्वामी था । समय में बदलाव में परिस्थितीयाँ और संस्कृतियाँ बदलती गयी। भारत वर्ष के केवल महाराष्ट्र राज्य का विचार करे तो वहाँ आदिवासीयों की सैतालीस जमातिया परीलक्षित होती है। यह जमातियाँ चारो और से सीमा तथा पहाडोके परिक्षेत्रो में फैली है। यह उत्तर मे भिल, पावरा, मावची, धानका, कोकणी, तडवी भिल, पुर्व की और महादेव कोली, ठाकूर, वारली, कोलाम, कातकरी माडीयाँ गौंड इ. जमातियाँ फैली हुई है। पुर्व पिठीका में इन जंगलों के स्वामी होने की, चर्चा वर्तमान से भी आदिवासी समाज में है, श्री सुरेश कोडीतकर जी की भी इस विषय में लिखते है की, ''हे आदिवासी लोक स्वत:ला जंगलाचे राजेच समजतात, तरी ही त्यांच्या घरी अठराविश्व दारीद्र्य असते. ही खरी शोकांतिका आहे. कारण हा आदिवासी समाज विकासापासून वंचित आहे, आर्थिक व सामाजिक दृष्टया सर्वात खालच्या पातळीवर येऊन पोहचलेला आहे.''१ मुलत: आज भी आदिवासी संस्कृति दो जून के रोटी के लिए संघर्ष रत है। वैश्विकरणने इसे भले ही अपने गोदिमे बिठा लिया हो पर यह बुढी अवस्था में प्राप्त खिलोनेसा लगता है, जो उसकी मूल पहचान नहीं है।

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर व्दारा स्थापित भारतीय संविधान के कलम ३४२(१) अनुसार भारत के महामहिम राष्ट्रपति व्दारा इसे घटना के ५ वी अनुसूची में स्थान भी प्राप्त है। भारतीय स्वातंत्र्यता के इतने वर्षो बाद भी जहाँ आज हम उत्तर आधुनिकता की और अग्रेसर है वहाँ वर्तमान समय मे भी डॉ. प्रदीप आगलावे के अनुसार यह आदिवासी जिसकी व्याख्या करते है, लिखते है आदिवसी वह जो एक समान भाषा बोलता हो एक पुर्वज व्दारा उत्पत्ती बढाने वाला एक विशिष्ट भूप्रदेश का निवासी, जो तांत्रिक ज्ञान और अक्षर जिसे नहीं है। रक्त संबंध वर आधारीत सामाजिक एवं राजकीय प्रथा का जो परम्परा से पडाव में भी शिक्षा, तांत्रिक शिक्षा, राजनिती इत्यादी सभी क्षेत्रो के वह औरों की तुलना में बहुत पिछडा हो माना जाता है।२

प्रौद्योगिकी का प्रभाव भारतीय समाज के सभी आदिवासीयोंपर हुआ है। यह प्रभाव वैसा प्रभाव नहीं है। जैसा प्रगत समाज पर होता है। यहाँ निजीजीवन की समस्याए ज्यो की त्यो है। परंतु आधुनिरण का असर समाज पर परिलक्षित होता है। छत्तीसगड वाले बस्तर, महाराष्ट्र के चंद्रपूर, उडीसा राज्य के कालाहांडी प्रदेश मे घोटूल की परंम्परा कायम है। घोटूल से तात्पर्य युवक युवतियोंके सांस्कृतिक ठिकाणोंको कहाँ जाता है। घोटूल का व्यवस्थापन आदिवासी युवक युवतियाँ करते है। जहाँ पर वे अपने भविष्य के सबक सिखते है। रात गाणे बजाणे में पिणे मे गुजारकर सुबह सभी अपने अपने घरोंको निकल जाते है। वर्तमान में टेलिविजन ने इस प्रथा का अर्थही बदल दिया है। टेलिविजन आधुनिकता की पहचान जरूर है।

परंतू संस्कृति और संस्कार की पहचान यह घोटूल विज्ञान के इस आविष्कार मे दब सा गया और आज इन ठिकाणोंपर यह आदिवासी युवक युवतीयाँ दुरदुरतक दिखाई नहीं देते। अन्य तीज त्यौहार जैसे होली दहशरोके मेले आदिमें भी संख्या की तुलना यह कम हो गया है, और उन रोमांचकारी त्योहारों की जगह इस टेलिविजन की बॉक्स ने लेली है यह विपरीत असर हुआँ है।

आधुनिकता की आस सभी को है। परंतू जहा प्रश्न आधुनिक संस्कृति और आधुनिकता का है वहाँ भी यह असर दिखाई देता है। फिर बस्तर के माडिया-मुरीया हो या जमातिया हो या झाबुआ के भिल या आसाम के गारों, महाराष्ट्र के भिल हो या तडवी भिल, कोकणी हो या माऊची हिमाचल के गादी आदिवसीयोंकी कोई भी प्रजाती इसके असरसे मुक्त नहीं है। प्रौद्योगिक विकास भले ही विकास हो परंतू उनके मूल जिवन में अभी वह ठहराव नहीं जो अन्य समाज में। आदिवासी आज भी मूल प्रश्नों को लेकर हि परेशान है और समाज प्रौद्योगिकरण का लक्ष केंद्रित कर रहा है, विवाह संस्कार जहाँ खुशी का माहोल तयार करता है कुछ आदिवासी बेटीयोंके विवाह उपरांत गुलाम बनाऐ जाते है विदर्भ के कोयलों की खानों में आदिवासी को जलाकर मारना कोई नई बात नहीं है, छोटी सी भूलपर कोडोसे पिटना उन्हे आदतसी हो गई है विवाह के पश्चात वह विवाह ऋण पूरा भुगतान करणे के लिए पिता को सावकार के यहाँ गुलामी करनी पडती है साथ में उसके पत्नि को भी। सावकार व्दारा अनेक पत्नियोंको रखेल बनाया गया है यह सामाजिक, धार्मिक और आदिवासीको शारीरिक शोषन भी है। ''कर्जदार गुलामाची बायको सुध्दा सावकाराची गुलाम होते, तिलाही सावकाराची सेवा करावी लागते सावकार तिला रखेल म्हणूनच वापरतात''३ यह सर्वार्थतासे पिछडापन है जब यह समुदाय आधुनिकता की दहलीज लांघता हुआँ उत्तर आधुनिकता का स्पर्श करेगा वहाँसे यह दशा समाप्त हो, दिशा प्राप्त होगी।

हिमालय के गादी आदिवासी भी इसके चपेट में दिखाही देते है प्राद्योगिक विकास सबकी अपेक्षा जरूर है जैसे प्रौद्योगिकी ने उनके जिवन में जो परिवर्तन शिक्षा, पर्यावरण आई हे वह विकास आवश्य है परंतू मिटकी दीदी का छत्तीसगड जिला बस्तर का वह जंगल बचाव आंदोलन पुन: प्राद्यौगिकरण पर प्रश्न उठाता है उसी स्वरूप के जल-जंगल के प्रश्न महाराष्ट्र के भूमिमें भी श्रीमती मेघा पाटकर जी ने और लोकसंघर्ष की नेता श्रीमती प्रतिभा शिंदे जी उठाती आ रही है। यह आंदोलन उनके सांस्कृतिक अस्मिता का प्रश्न है प्रौद्योगिकी के नाम पर पेडो को काटना, जंगल हटाना आदिवासीयोंके अस्तित्व का प्रश्न है मिटकी दिदी के गाव आसना में अचानक कृत्रिम वन लगानेकी, जंगल विभाग की, परियोजना का आरंभ ही पेड काटना है जहाँ आदिवासी पेड उगाने को विश्वास करते है, ''१९६१ का महाराष्ट्र शासन का कानून भी यह कहता है।''४

दरअसल खुली जमीन पर पौधोंका बोना विकास हो सकता है किंतू मिटकी दिदी के आंदोलन का अर्थ शाश्वत पेडोंको बचाना है जंगल की पेडो की योजना का असर आदिवासी जिवन पर गहेरे दुर तक पडेगा इस बात से भयभीत हो मिटकी दिदी ने उत्तराखंड के जंगल काटने वाले आंदोलन के नेता श्रीमान सुंदरलाल बहुगुणा के 'चिपको आंदोलन' का आदर्श लेकर महिलाओं को अपनेसाथ जोडकर पेडोंको बचाना आदिवासी संस्कृती है। आदिवासीयोंका जिवन इन्ही जंगलोपर निर्भर होता है। मसलन सुबह दांतौन की लकडी, गोंद, फुल, फल, घरोंके लिए पेडो के पत्ते, लकडियाँ इन्हीसे प्राप्त होते है। पर आदिवासी कभी भी हरा भरा वृक्ष नहीं काटते है यही उन्की सभ्यता की पहचान है। बल्सर की मिटकी दिदी आदिवासी जनजिवन की पहचान है जो निस्वार्थ जनसेवा करती है। 'तभी तत्कालीन जिलाधिश के समजाने पर भी महिलाए पेडोसे चिपक गयी थी'६ हाल ही में चलाए जनेवाली 'स्वच्छ भारत योजना'

PRINCIPAL
SAU.RAJANITAI NANASAHEB DESHMUKH
ARTS.COMMERCE & SCIENCE COLLEGE
BHADGAON DIST.JALGAON (424105)